मुंगेली चलो जय सतनाम मुंगेली चलो

गुरू बालकदास जी का बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा

गुरू बालकदास जी का 153 वॉ बलिदान दिवस

व

मान -सम्मान एवं हक -हुकुमत

के लिए

राष्ट्र व्यापी संकल्प रैली

तिथी ः दिनांक 31 मार्च 2013 दिन रविवार दोपहर 11 बजे से

स्थान ः सतनाम भवन, दाउपारा मुंगेली, जिला मुंगेली छत्तीसगढ़

आदरणीय संत जनों !

हमारे बलिदानी राजा गुरू बालकदास ः

ज्ञात हो कि **28 मार्च सन् 1860** को सतनाम आन्दोलन के तहत औराबॉधा (मुँगेली के पास) में कुत्सित व घृणित मानसिकता के हिंसक सवर्णो द्वारा षडयंत्र पूर्वक गुरू बालकदास की हत्या की गई थी। उन्हें औराबांधा जाने के लिए मना करने के बावजूद वे समाज के मनोबल को बढ़ाने हेतु, सतनाम आन्दोलन के हित में गुरू तेगबहादुर की तरह स्वयं को कुर्बान करना उचित समझे। सन **1801** भादो कृष्ण पक्ष अष्टमी को जनमें गुरू बालकदास जी आज हमारे बीच नहीं रहे, और न ही ऐसा कोई ऐसा चमत्कार है, जिससे उनकों फिर से जिंदा किया जा सकता है।हॉ अगर हम जिंदा कर सकते हैं तो, उनके विचारों को, कार्यो को, उनके आन्दोलन को, उनके द्वारा प्रतिपादित संपूर्ण छत्तीसगढ़ को सतनाम-मय बनाने के तरीका को।वे हमें आन्दोलन दे गये, उनका सतनाम आन्दोलन आज भी जिन्दा है। "लोग कहते है वीर मरते नहीं, वो मरके अमर हो जाते हैं।कौन कहता है कायर जीते यहॉ, वो जीके भी रोज मर जाते हैं।" सरहा-जोधाई सतनाम के वीर सिपाही के साथ बलिदानी राजा गुरू बालकादास को कोटि कोटि नमन! आज हमें सतनाम आन्दोलन से क्या मिला, हम यहॉ तक कैसे पहुंचे, यह जानने का विषय है। हमें वर्तमान से सीख लेते हुए भविष्य का रास्ता तय करना है ताकि आने वाला कल उज्वल हो सके।

दुनिया में सतधर्म ही मानव का मूल धर्म है शेष सभी मजहब ः

सतधर्म ही मानव का केवल एक मात्र धर्म है शेष मजहब व संप्रदाय है जो केवल अपना और अपने स्वार्थ तक सीमित है। सतधर्म बिना किसी विभेद के सभी जीवधारी प्राणियों पर बराबर लागू होता है और जिसके व्यवहार से मन में शांति उत्पन्न होती है। हर व्यक्ति जन्म से सतनामी है क्योंकि प्रेम दया करूणा की भावना से वह ओत प्रोत होता है केवल संसर्ग के कारण विकार उत्पन्न होते हैं और बाद में सांप्रदायिक ताकतों के इशारे पर वे मजहबी बन जाते हैं। घृणा व विद्वेष के साथ जाति- पाति व सांप्रदायिकता की जहर मनुष्य को ईष्यालु, गुस्सैल, विषैला व खतरनाक हिंसक प्राणी बना देता है। यही, वह असत मार्ग है जो अपने -पराये की पाठ पढ़ाकर विभेद पैदा करती है, अधर्म है। अतः प्रेम व भाईचारा के साथ, विष का बीजनाश करते हुए, सतनाम का अमृत पिलाकर, मानवता का संदेश जन जन तक पहुँचाये ताकि हमारा छत्तीसगढ़ खुशहाल व प्रगतिशील हो सके। विचारधारा ही परिवर्तन की दिशा तय करती है।आज भी मूलतः यहॉ के **92%** मूलनिवासियों का विचारधारा एक ही है चाहे वे संत कबीर, गुरू घासीदास, गुरू नानक, गहिरा गुरू या बुढ़ादेव का कोयपुनेम, सब सतनाम के मानने वाले है। विभ्रांति फैलाना शोषको का काम है ताकि हम आपस में लड़ते रहें और वे हमारे विभाजन का लाभ लेते रहें। हमें समझने का देर है कि दुनिया में सतनाम केवल एक और एक ही है- सतनाम अपने आप में एक क्रान्तिकारी शव्द है। जहॉ -जहॉ सतनाम का पदार्पण हुआ वहॉ वहॉ क्रान्ति का बिगुल बजा है। सतनाम में वह शक्ति है जो धरती पर रहते हुए परलोक का सपना देखने वालों को जमीन की सच्चाई पर खींच लाती है। इस लोक में रहते हुए सत्य मार्ग पर चलना अपने आप में एक चमत्कार है। अतः आप कितना आगे बढ़े है वह उतना महत्व नहीं, महत्व इस बात का है कि आप किस दिशा में आगे बढ़े है।

परंपराओं का गढ़ छत्तीसगढ़ :

ऐसे तो भारत की प्राचीनतम नाग– द्रविड़ सभ्यता कला और संस्कृति में उत्तम रहा है लेकिन यह भी सर्व विदित है कि शिल्प कला के साथ कृषि में प्रवीण खासकर छत्तीसगढ़ के मूल निवासी आदिकाल से द्रविड़ संस्कृति में महारथ, प्रकृति के पूजारी रहे हैं। रूढ़िवाद व अंधविश्वास से दूर यहॉ के मुख्य पर्व एक तरफ प्रकृति के बिल्कुल करीब, कृषि और फसल से ही संबंधित हरेली, भोजली, तीजा, पोला, नवाखवाई, विजयदशमी मे गढ़ तोड़ने की परंपरा, जेठौनी, छेरछेरा आदि है। वहीं स्त्री– पुरूष की सहभागिता के साथ सुआ, गेंड़ी, गौरा, करमा, पंथी, राउतनाचा, डंडा, शैला आदि मनोरंजन व कला के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। यहॉ की मूल संस्कृति प्रेम व भाईचारा पर आधारित रहा है। समयोपरांत कुछ स्वार्थी व सांप्रदायिक ताकतों ने यहॉ के सौहाद्रपूर्ण वातावरण को दूषित कर नस्ल, रंग व वर्ण भेद से भी खतरनाक जाति भेद का जहर घोल दिया। अशिक्षा के कारण लोग जाति और उपजाति में बंटे गुलामी का जीवन जीने को मजबूर है। यह जातिवाद का परिणाम है कि यहॉ समस्त 92% पिछड़ी जातियॉ, आपसी मतभेद के कारण मात्र 8% बाहरी सवर्णो के गुलाम हैं। प्रेम –भाईचारा और सखी– मितान का गढ़, आज करम—काण्ड के आड़ में रूढ़िवाद और अन्धविश्वास से जकड़े जातिवाद का गढ़ नजर आता है। रूढ़िवाद के साये में दिन प्रतिदिन लोग अपनी मूल प्राकृतिक संस्कृति को भूलते जा रहे है। यह कैसी बिडंबना है कि देवी– देवताओं के भगदड़ के बीच, यहॉ लोग भूखे व नंगे सोने में मजबूर हैं। लोगों के पास पेट भरने को दाना नहीं, पर शोषक वर्ग भोले –भाले आम आदमी को धरम– करम के बहाने, कर्मकाण्ड के चक्कर में उलझाकर, चारों धाम की यात्रा की वाहवाही जरूर ले रहे है, साथ ही सत्ता के गलियारे में ठगी –व्यापार व लूट– पाट का धंधा भी आराम से चला रहे हैं। जागो साथियों जागो... ।

संत महापुरूयों का असली गढ़ छत्तीसगढ़ :

इन सबके बावजूद जाति और मजहब से ऊपर उठकर संत महापुरूषों की श्रद्धा व आदर करना यहॉ की परंपरा रही है। यही कारण है कि समय– समय पर महामानव बुद्ध से लेकर संत कवीर, गुरू घासीदास व गुरू बालकदास सबने इस पावन भूमि पर प्रेम व भाईचारा के साथ सतधर्म का संदेश देते हुए सतनाम संस्कृति का बीजारोपण कर नव चेतना पैदा करने का प्रयास करते रहे है। करमा माता व गहिरा गुरू के सत संदेश व सतपथी कोयापुनेम इसी धरती पर पल्लवित हुआ है जिसे आज भी यहॉ के मूलनिवासी बड़े श्रद्धा के साथ अनुशरण करते हैं।आदरणीय खूबचंद बघेल के साथ शहीद बीरनारायणसिंह की राष्ट्र भक्ति किसी से छिपा नहीं है जिन्होंने मूल छत्तीसगढ़ियों के स्वाभिमान जगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा। इनके अलावा भी कई और महान समाज सेवी है जिनका नाम यहॉ नहीं लिखा जा रहा है पर आज ये सब के सब हमारे श्रद्धा के पात्र है।

गौरवशाली इतिहास व वीर शहीदों का गढ़ छत्तीसगढ़ :

यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि सतनामी शदियों से जुल्म ज्यादती व अन्याय अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत रहा है चाहे 1672 में औरंगजेब द्वारा जजिया लगाये जाने के खिलाफ सतनामी विद्रोह हो या फिर छत्तीसगढ़ में सूबेदारी प्रथा व पिंडारियों द्वारा लूटपाट का विरोध हो, सतनामियों ने हमेशा सिर उठाकर जीना सीखा है। गुरू बालकदास जी का औराबांधा में एक घर के सतनामी के आहवान में जाना इसी बात का सूचक है। कायर दुश्मनों की सामने से वार करने की हिम्मत कहॉ थी जो चोरों की तरह छिपकर वार किया लेकिन सतनाम के पुरोधा, सरहा और जोधाई भी बीरता के साथ पीछे नहीं हटे और जंगे मैदान में गुरू बालकदास के साथ शहीद हो गये उन्हें कोटि कोटि नमन! इतिहास साक्षी है कि औरंगजेब के साथ युद्ध करते नारनौल से मथुरा तक 5000 से ज्यादा सतनामी शहीद हुए थे आज भी सतनामी होली नही मनाते बल्कि उन शहीदों की याद में फाल्गुन शुक्ल पक्ष चौदस से चेत्र कृष्ण पक्ष द्वितीय चार दिन तक भण्डारा कर सतनाम का जाप करते वीर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते है। महाकोशल की राजधानी सिरपुर बौद्धकालीन ज्ञान केन्द, गौरवशाली हैहैय वंशी काल, बलिदानी राजा गुरू बालकदास, शहीद बीरनारायणसिंह, शहीद गेंदसिंह मारिया विद्रोह, मा. नैनदास व नकुल ढिढी आदि इस बात का सबूत है कि यहॉ के वीर सपूतों ने हमेशा अन्याय –अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत व गौरवान्वित करते रहे है।

अकूत प्राकृतिक संपदाओं का गढ़ हमारा छत्तीसगढ़ :

अकूत संपदाओं से भरपूर हमारा छत्तीसगढ एक तरफ लोहा का भंडार है तो दूसरी ओर कोयला बाक्साइट हीरा कोरण्डम जैसे कीमती खनिज पदार्थो से भरपूर तो तीसरी ओर नदियों का संगम और घने जंगलों सै भरपूर यह क्षेत्र अपने आप में विश्व का सबसे धनी प्रदेश है। यहॉ के मूल निवासी शदियों से जल, जंगल और जमीन के सहारे अपना जीविकोपार्जन करते आ रहे है और धान के कटोरा के नाम से विख्यात छत्तीसगढ में 62% लोगों का जीवन कृषि कार्य पर निर्भर है जिनमें से अधिकतर भूमिहीन मजदूर किसान हैं। लेकिन विडंबना

यह कि भूमि हीन खेतीहर मजदूर किसानों को एक एकड़ जमीन देने में सत्ता में बैठे लोगों की नानी मर जाती है वहीं करम–काण्ड के नाम पर **3000** एकड राउतपुरा सरकार को या फिर सैकड़ों एकड़ वेदान्ता जैसे पूंजीपतियों मुफ्त में देने में एक पल भी नहीं लगता। औद्योगिक घराने बरोक–टोक सरकारी जमीन पर कब्जा कर लेते है। वही कोई मूलनिवासी करे तो उन्हें जेल की चक्की पिसनी पड़ती है। औद्योगिकरण के नाम पर जंगल –मैदान को छोड़कर महानदी और हसदेव के उपजाऊ खेतीहर कछार जमीन को जबरदस्ती कब्जा कर उसमें बड़े –बड़े पावर प्लांट लगाये जा रहे है पर बिजली उत्पाद का दसवॉ हिस्सा भी यहॉ छत्तीसगढ़ में खपत करने की क्षमता नहीं है बल्कि बाहर के लोग मजा उड़ायेंगे। रोजगार तो दूर उल्टा फसल चौपट होगा ही, आज धान का कटेरा कल राख का कटोरा अवश्य बन जायेगा साथ ही हवा पानी के प्रादूषण से बीमारी मुफ्त में मिलेगी। ऐसा है धनी प्रदेश के निर्धन लोग सोचे तो जरा ...।

भ्रष्टाचार का गढ़ छत्तीसगढ़ ः

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में बड़े बड़े बोर्ड लगे है संभावनाओं का गढ़ छत्तीसगढ़ जिसे पढ़कर ऐसा लगता है कि लिखने वाले ने शायद सोच समझ कर लिखा है। छत्तीसगढ़ में कुछ भी संभव है शायद इसीलिए शोषक वर्ग के साथ– साथ सांप्रदायिक ताकतों को सिर उठाने का मौका मिल गया है। वे जी भर कर दोनों हाथ से छत्तीसगढ़ को लूटने में लग गये। विकास के नाम पर विनाश की ओर ढकेला जा रहा है। नशा बन्दी की बात करते है और गांव गांव में दारू का अवैध ठेका भी वही चलाते है। औद्यागिक घराने तो भ्रष्टाचार का गढ़ है ही, इसीलिए वे तेजी से छत्तीसगढ़ की ओर भागे है। ऐसे तो कोयला, लोहा खदान व औद्योगिकरण के नाम पर राज्य को बेचने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ा जा रहा है। भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है जिसका कुछ नमूना – शिक्षा कर्मियों के संविदा नियुक्ति का रेट आज तीन लाख, पुलिस इंसपेक्टर की बोली दस लाख है, ट्रांसफर, पोस्टिंग का तो रेट पद के अनुसार तय होता है और शायद ही कोई विभाग इस धंधा से अछूता हो। गृह मंत्री को सफाई देना पड़ता है कि वे किसी से घूस नहीं लेते यह बात ठीक है पर कौन लेता है यह भी तो बताना चाहिए। माला माल का लूट है लूट सको तो लूट। एक बार सत्ता खिसका गयी तो सब कुछ जायेगा छूट।

बेरोजगारी का गढ़ छत्तीसगढ़ ः

आज **92%** समस्त पिछड़ी जातियों के आरक्षण के नाम पर राजनीतिक खेल खेला जा रहा है। रोजगार के नाम पर बाहरी लोगों का ही बोलबाला है यहॉ के लोगों को ज्यादातर झाडू व पोछा लगाने का काम मिलता है। शिक्षित बेरोजगारों की संख्या दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ती जा रही है। बेरोजगारी से त्रस्त बड़े पैमाने में लोग छत्तीसगढ़ से लगातार पलायन कर रहे हैं। यहॉ के मजदूर तो पहले से ही मजबूर है उन्हें न्यनतम मजदूरी भी नहीं मिलता, कहें तो किसे कहें चारों ओर भ्रष्टाचार का ही बोल बाला है। उद्योगपति लोग बेखौफ बाहर से मजदूर लाकर काम करा रहे हैं व पूनर्वास के नाम पर केवल धोखाधड़ी हो रहा है और सत्ता के गलियारे में बैठे लोग बेपरवाह हैं। आम आदमी को धरम– करम के बहाने, कर्मकाण्ड का पाठ पढ़ाते हुए मुॅह– पेट में व्यस्त रखने की पुरजोर कोशिसें हो रही हैं। जनता विरोध कहीं न कर बैठे अतः उन्हे बार– बार एहसास दिलाया जा रहा है कि उनकी दुर्दशा का कारण पूर्वजन्म का फल है अतः अगले जनम को सुधारने के लिए इस जनम भर कोल्हू की बैल की तरह काम करते –मरते, चारों धाम यात्रा कर पाप कटाने में व्यस्त रहें और चंद मुट्ठीभर शोषक वर्ग मजे से राज–काज का सुखभोग करते रहें। सत्ता में बैठे लोग आम आदमी की समस्या के प्रति किसी भी तरह संवेदनशील नजर नहीं आते। चारों ओर धोखा ही धोखा है। कब तक सोती रहेगी यहॉ की जनता।

जुल्म– ज्यादतियों का गढ़ छत्तीसगढ़ ः

पूर्व में केसतरा, घूमका, बोड़सरा जैसे जघन्य काण्ड को जनता भूली नही है अब तो हर रोज कुछ न कुछ नया काण्ड सुनने को मिलता है। अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ते जा रहे हैं। पिछले नौ साल में **7000** बच्चे न जाने कहॉ गायब हो गये किसी को पता तक नही। शासनतंत्र पूरी तरह चुप्पी साधे है जैसे यहॉ कुछ हुआ ही नहीं है। नक्सलियों के आड़ में दोनों ओर से आदिवासियों का सफाया किया जा रहा है। चाहे कांकेर व अन्य कई छात्रावासों के मासूम बच्चियों के साथ यौन– शोषण व महिलाओं के साथ बलात्कार का मामला हो या फिर सलवा जुडुम का जुल्म हो, छत्तीसगढ़ अब जुल्म और ज्यादतियों का गढ़ नजर आने लगा है। समस्त पिछड़ी जातियॉ असुरक्षित लुटा –पिटा महशूश कर अपने भागेदारी व स्वाभिमान के लिए संघर्ष कर रहा है। अतः जुल –ज्यादती, भ्रष्टाचार व शोषण मुक्त समतावदी राज्य बनाना शोषकों का काम नहीं है जो इसके शिकार है, उन्हें स्वयं संघर्ष के लिए तैयार होना होगा।

मान और सम्मान के लिए संघर्षः

प्रजातंत्र के 62 साल बाद भी वर्तमान खड़ी विषमतावादी समाज व्यवस्था के कारण मानवीय मुल्यों के साथ कुठाराघात हो रहा है। एक व्यक्ति का एक वोट है और एक वोट का एक मूल्य है लेकिन सीढ़ीनुमा समाज व्यवस्था के कारण एक व्यक्ति का एक मूल्य नहीं है। कुर्मी समाज में पैदा हुए छत्रपति साहू जी महाराज ने कहा है – ***"भारत में विधाता की भी जाति होती है। समस्या का जड़ जाति है इसलिए हर समस्या का हल जाति से प्रारंभ होता है। जब तक जातियॉ रहेंगी देश दरिद्र, बुद्धिहीन और गुलाम रहेगा। भारत की उन्नति जल्दी या देर से होगी यह जाति भेद के नष्ट होने पर निर्भर करता है। ब्राह्मणों का जन्म सिद्ध अधिकार समाप्त होना चाहिए। मैं अपना स्पष्ट विचार रखता हूॅ मुझे कुछ डर नहीं।"*** यहॉ की समाज व्यवस्था 6000 जातियों में वंटा हुआ है। कुछ लोग वर्ण और जाति दोनों के आधार ऊच्च वन हुए है तो कुछ लोग सबसे नीचे अपमानित हैं। जो नीचे बैठा है वह ऊपर वालों की वोझ से दवा जा रहा है, जो बीच में है वे पीसे जा रहे है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों की जाति और वर्ण दोनों एक ही है ताकि वे संगठित रहें। वास्तव में जातियॉ केवल शूद्रों के लिए है ताकि ये हमेशा विभाजित, आपस में लड़ते कमजोर रहें। इस व्यवस्था में ऊपर से नीचे की ओर अपमानित होते जाते है और वहीं नीचे से ऊपर की ओर मान– सम्मान बढ़ते जाता है। अतः जिनको इस व्यवस्था से लाभ हो रहा है ऐसे लाभदायी वर्ग यथास्थिति बनाये रखना चाहते हैं वे इसे बदलना नहीं चाहेंगे और न ही वे बदलने की कभी बात करेंगे। लेकिन जिनको हानि हो रहा है वे कब तक चुप बैठेंगे। हमारे गुरूओं ने सतनाम आन्दोलन चलाकर इस जातिवादी व्यवस्था को जड़ से समाप्त करने की कोशिश की।भारत के अन्य प्रांतों में सतनामी कोई जाति नहीं है यह विशुद्ध विचारधारा है लेकिन छत्तीसगढ़ में यह एक जाति में सिमट कर रह गया है। यह कैसी विडम्बना है कि संत कबीर, गुरूनानक व गुरू घासीदास के सतनाम आन्दोलन जो प्रेम और भाईचारा का संदेश देता है ऐसे उत्तम विचारधारा के लोगों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। वही घृणा और विद्वेष फैलाने वाले लोग स्वयं को उच्चवर्ग कहने में शर्मिंदगी भी महशूस नहीं करते।अतः हमें आपसी विभेद को समाप्त कर समता और सम्मान के लिए विषमतावादी व्यवस्था के खिलाफ एक जुट होकर संघर्ष करना होगा ताकि हम मान और सम्मान के साथ अपना हक और हुकुमत वापस ले सकें।

हक और हुकुमत के लिए संघर्ष ः

जिस तरह का अधिकार चाहिए उसी तरह का संघर्ष करना होगा। हक और हुकुमत के लिए संघर्ष जरूरी है। गुरू घासीदास जी द्वारा सन् 1820 से 1830 तक सतनाम आन्दोलन के तहत चलाये। उनके ***बौद्धिक क्रान्ति*** (Intelectual War) का ही परिणाम है कि सन् 1825 में पहली बार अंग्रेज शासकों द्वारा शिक्षा का द्वार सभी वर्गो के लिये खोला गया। पिण्डारी प्रथा से समाज को मुक्त कर 700 से ज्यादा गांव के जमीनदार रहे। सूबेदारी प्रथा को समाप्त कर गुरू बालकादास जी को राजा गुरू की पदवी से नवाजा गया और छत्तीसगढ़ के गांव गांव में सभी समुदाय के लोग सतनाम आन्दोलन में शामिल हुए। समाज को संगठित करने के लिए *आदरणीय नकुल ढीढ़ी* **जी** पहली वार *18 दिसम्बर सन् 1938* को अपने ग्राम भोरिंग (महासमुंद) में गुरू घासीदास जयंती का शुरूवात किये। उन्होंने *सन् 1961* **में** फागुन शुक्ल पंचमी, छठमीं सप्तमी को तीन दिवसीय **गिरौदपुरी मेला** का शुरूवात कर समाज को एक सूत्र में पिरोया जिसकी मलाई आज कुछ लोग खा रहे है। इनके अलावा अन्य गुरूओं, राजमहंतों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक संगठनों ने भी इस दिशा में अपने अपने तरीको से प्रयास किये हैं, जिनको भी नहीं भुलाया जा सकता। समाज को संगठित करना समय की जरूरत है जिसके लिए त्याग व वलिदान की आवश्यकता है। त्याग की भावना पैदा करने के लिये, **गुरू बालकदास जी के बलिदान** को जन जन तक प्रचारित व प्रसारित करना अत्यंत जरूरी है। हम साल में एक बार गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर मिलते हैं दूसरा केन्द्र बिन्दु गिरौदपुरी का मेला है।शेष समय हम बाजार की सड़ी गली परंपराओं से गुजारा करते है जिससे समाज प्रादूषित हो रहा है। यदि मानसिक प्रादूषण से बचना है तो हमे वार– बार मिलते जुलते रहना होगा, ताकि प्रकृति के अनुरूप हम अपना प्राचीन सतनाम संस्कृति को सुदृढ़ बना सके। संगठित समाज के लिए हमें वैचारिक एकरूपता स्थापित करना होगा ताकि हम अपना **हक और हुकुमत** हासिल कर सकें। हम सत्ता में निर्णायक भूमिका अदा कर सकते है। हमें गुरू बालकदास का सपना साकार करने का संकल्प लेना होगा। यदि कोई विकने को तैयार है तो खरीदने वाला खरीदेगा ही। हमे अपनी ताकत को पहचानना होगा और विकाऊ समाज के बदले टिकाऊ समाज बनाना होगा। जिस दिन हम टिक गये उसी दिन हम सत्ता के करीव होंगे। हमें केवल संगठित होना है हमारी मर्जी के बगैर कोई सत्ता में नहीं बैठ सकेगा।

सामाजिक एकरूपता के लिए प्रशिक्षण जरूरी ः

ज्ञात हो कि विगत 9 फरवरी 2004 से सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में सोमवार को संध्या 6.30 बजे नियमित रूप से सामूहिक गुरू वंदना की शुरूवात की गयी। तव से लगातार प्रत्येक सोमवार को सामूहिक गुरू वंदना होती है। सतनाम के अनुरूप गुरूओं के उपदेश व

अमर वाणियों को चिंतन मंथन कर जन जन तक फैलाने व अमल करते हुए अपने आदत व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन के लिये, गांव गांव में संपर्क एवं सहयोग का एक उचित माध्यम गुरू वंदना केन्द्र स्थापित करना जरूरी है। इस सफल प्रयोग का असर आज छत्तीसगढ़ में पड़ने लगा है और सैकड़ों सतनाम भवनों में भी सुनिश्चित करने की दिशा में लगातार प्रयास जारी है। दिन प्रतिदिन यह सतनाम लहर आम आदमी की चाहत भी बनते जा रही है। इसके साथ ही सामाजिक कार्यो को नियमित व संयमित रूप से संपन्न करने, कराने के लिये कार्यकर्ताओं को उचित प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वैचारिक एकरूपता स्थापित हो और ताकतवर समाज बनाया जा सके।

चिंतन मनन जरूरी क्यों ?

सामूहिक गुरू वंदना एवं सामूहिक गुरू आरती के बाद पांच मिनट सामूहिक चिंतन मनन अपने अपने आदत व्यवहार के बारे में करते हैं। मानव को अपने आदत व्यवहार के संबंध में चिंतन मनन करना क्यों आवश्यक है। हमें पता है कि बाबा गुरू घासीदास जी **18** दिसम्बर **1756** को गिरौदपुरी में अवतरित हुये थे। जैसे ही बाबा जी ने होंश संभाला उन्होंने मानव समाज की दशा व दिशा को देख कर काफी दुखी हुये। चेतना के अभाव में मानव– मानव के बीच भेद– भाव, जांति– पांति , अन्याय– अत्याचार आदि के साथ विभिन्न प्रकार के दुर्गुणों से ग्रसित मानव स्वयं ही उनका दुखी होने के कारण थे। चिंता से दुखों का हल होना संभव नहीं है। चिंतन मनन से ही दुख निवारण के कुछ न कुछ रास्ते अवश्य निकलते हैं। बाबा जी ने छाता पहाड के एकांत, शांति प्रिय जगह पर चिंतन– मनन कर मानव समाज के दुख निवारण के कुछ रास्ते सुझाये जिसे हम उनके उद्देश्य व अमरवाणियां के नाम से जानते हैं। बाबा जी के रास्ते पर हम कितना चल पाते हैं यह आत्म चिंतन का विषय है। सत चेतना जागृत कर अंतर्मन से हम देखें कि हमारी ऐसी कौन– कौन से आदत व्यवहार है जो हमें खुद को अच्छा लगता है परिवार, मानव समाज व देश के हित में हैं। ऐसी आदत व्यवहार को हम दूसरों को भी जरूर बतायें। दूसरी तरफ हम ये देखें कि हमारे अंदर ऐसी कौन सी आदत व्यवहार है, जिसे हम ऊपर से ठीक बताते हैं लेकिन हमारा अंतर्मन मनाही करता है, जो मानव समाज के हित में नहीं है। ऐसी आदत व्यवहार को किसी को बताने की जरूरत नहीं है, पर चिंतन मनन कर धीरे –धीरे इन आदत व्यवहार को बदलने की जरूरत है। बाबा जी के सतनाम विचार धारा, प्रेम व भाईचारा की भावना के प्रचार प्रसार से सतनाम मय का वातावरण पैदा होने में सहायक हो सकता है।

भविष्य की चुनौती के लिए नवयुवक वर्ग हमेशा तैयार रहें ः

सत– पथ पर चलने वालों को विषमतावादी *सांप्रदायिक ताकतों* से सदैव चुनौती मिलता रहेगा और हमें इसके लिए हर पल तैयार रहना होगा। गुरू बालकदास जी की बलिदान सबसे बड़ी चुनौती का उदाहरण हमारे सामने है। वे रावटी लगाते तत्कालीन व्याप्त *विषमतावदी समाज व्यवस्था, अन्याय– अत्याचार* आदि के खिलाफ *समता, सम्मान एवं भागीदारी के साथ, प्रेम और भाइचारा* का संदेश देते हुए गांव –गांव में सतनाम आंदोलन चलाये। फलस्वरूप पूरा गांव के गांव की जनता, सारे भेदभाव को त्यागकर, सतनाम आन्दोलन में शामिल होने लगे। इस आन्दोलन से जातिवादी व्यवस्था चरमराने लगी और शोषक वर्ग व सामंती ताकतों में खलभली मच गयी। लेकिन सतनाम के पुरोधा निर्भिक तनिक भी नहीं झुके बल्कि जनेऊ और तलवार धारण कर तत्कालिन रूढ़ीवादी खड़ी व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया। सती प्रथा के विरोध में नारियो को सम्मान और बराबरी का हक दिलाने हेतु जन चेतना अभियान चलाये फल्स्वरूप अंग्रेजों द्वारा सन् **1829** में सती प्रथा को प्रविंधित करना पड़ा और गुरू बालकदास जी को **राजा गुरू** की पदवी से नवाजा गया। सतनाम आन्दोलन अपने पटरी पर तेज गति से चलने लगा, वहीं रोक पाने में असफल सामंती शोषक सवर्णो द्वारा गुरू बालकदास की हत्या का षडयंत्र होने लगा और **28** मार्च **1860** में गुरू बालकदास की औराबांधा में निर्ममतापूर्वक हत्या कर दिये। सतनाम के पुरोधा सतनाम आन्दोलन में अपने अंगरक्षक सरहा और जोधाई के साथ शहीद हो गये। आप सबको शत शत प्रणाम **!** इससे संपूर्ण मानव समाज को सबक लेने की जरूरत है।

हमे अपना इतिहास स्वयं लिखना होगा ः

आज इन सारी इतिहास को भी जानने की जरूरत है। आज हमें अपनी लेखनी का इस्तेमाल करते हुये समाज द्वारा संपादित कार्यक्रमों का लिपी बद्व करना भी जरूरी है, ताकि अगली पीढ़ी को सीख व सबक मिलता रहे। आधुनिक मिडिया **मोबाइल** व **इंटरनेट** आज प्रचार प्रसार के सशक्त माध्यम बन चुके हैं, इसका हम भी समुचित उपयोग जरूर करें। आज हमें **18** दिसम्बर के साथ ही **28** मार्च गुरू बालकदास जी के बलिदान दिवस को भी रेखांकित करने की जरूरत है। इसी को ध्यान में रखते हुये सन् **2007** से प्रत्येक वर्ष भिलाई से गुरू बालकदास जी के बलिदान दिवस पर **संकल्प रैली** का आयोजन होते आ रहा है। इसी कड़ी में इस वर्ष **मुंगेली मे राष्ट्र व्यापी संकल्प रैली** आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आप सबका सहयोग आपेक्षित है। आइये हम सब आज गुरू बालकदास के अधूरे सपनों को पूरा

करने का, *जो कर्नल इग्नू के शब्दों में ः-* **अगर गुरू बालकदास जी 10-15 साल और जिंदा होते तो संपूर्ण छत्तीसगढ़ सतनाम–मय होता,** हम आज सब संकल्प लेते है कि हमें पूरे छत्तीसगढ़ को सतनाम–मय बनाना है ताकि छत्तीसगढ़ का हर बच्चा– बच्चा प्रेम और भाईचारा के साथ शोषण रहित समाज व्यवस्था के निर्माण में भागेदारी बन सके।

हमारा उद्देश्य ः

हम एक ऐसे सतनाम पन्थ का पुनर्निर्माण करेंगे, जो हमारे **'मान सम्मान की रक्षा'** के साथ 'हमारे पर–निर्भरता का अन्त' करते हुए उचित नेतृत्व के साथ **'मानवीय मूल्यों'** में निरन्तर बृद्धि करते हुए **'सर्वांगिण विकास'** की ओर उन्मुख हो।ताकि **आत्म–सम्मान** की रक्षा के साथ संपूर्ण छत्तीसगढ़ व भारत देश का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास सम्पन्न हो सके और सर्वांगिण विकास की दिशा तय हो सके।

हमारा संकल्प ः

आज हम गुरू घासीदास व बालकदास जी के मूल सतनाम आन्दोलन को पुनर्जीवित करने का संकल्प लेते है कि ः

1 हम समाज में उचित नेतृत्व पैदा करेंगे।

2 समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मान –सम्मान एवं हक –हुकुमत की रक्षा करेंगे।

3 रूढ़िवाद और अन्धविश्वास का अंत करते हुए समाज को आत्मनिर्भर बनायेंगे।

4 मानवीय मूल्यों को ऊपर उठाते हुए व्यक्तिगत मूल्यों को बढ़ायेंगे।

5 सामाजिक समस्या व आर्थिक विपन्नता से मुक्ति का वैज्ञानिक हल, प्रेम व भाईचारा का सन्देश जन जन तक पहुँचायेंगे।

6 सतनाम के माध्यम से जीवन को अत्यंत सरल, व्यवहारिक व सुव्यवस्थित बनायेंगे।

7 संघर्ष के बजाय आत्मसंघर्ष को महत्व देते हुए समाज को प्रशिक्षित, अनुशासित व संगठित करेंगे।

आओ हम सब मिलकर सबके सुखी जीवन का कामना करें।

नारे ः

जय सतनाम — **जय सतनाम, जय सतनाम।**

सतनाम अमर रहे — **अमर रहे, अमर रहे।**

वो जाने अमृत का स्वाद — **जो करे सतनाम को याद।**

रूढ़िवाद अन्धविश्वास — **सतनाम करेगा नाश।**

गुरू बालकदास की कुर्बानी — **कभी न जायेगी खाली**

मनखे मनखे एक समान — **कह गये घासीदास महान।**

जागो भाई हो गयी भोर — **सतनाम ने किया अंजोर।**

भाईचारा बनायेंगे — **घृणा द्वेष मिटायेंगे।**

ज्ञान का जोत जलायेंगे — **अन्धविश्वास मिटायेंगे।**

संकल्प रैली अमर रहे — **अमर रहे, अमर रहे**

28 मार्च को — **याद करो याद करो**

गुरू बालकदास जी के बलिदान को— **याद करो 2 बार**

28 मार्च से — **सबक लो सबक लो**

गुरू बालकदास जी के बलिदान से— **सबक लो सबक लो**

औराबांधा की घटना को — **याद करो याद करो**

औराबांधा की घटना से — **सबक लो सबक लो**

गुरू वन्दना

सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।
सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।
सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।
मोला दे दे गुरू ज्ञान सत्नाम के. हो मोला दे दे गुरू ज्ञान सत्नाम के...
काहे लागे दियना काहे लागे वाती.... **2** वार
काहे के तेल जलै सारी राती..... **2** बार
मोला दे दे गुरू ज्ञान सत्नाम के....
तन लागे दियना मन लागे वाती... **2** बार
प्रेम के तेल जलै सारी राती.... **2** बार
मोला दे दे गुरू ज्ञान सत्नाम के....
सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।
सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।
सतनाम सतनाम सतनाम बोल । धन्य गुरू घासीदास बालकदास बोल ।।

सतनाम आरती

जय हो आरती होथे घासीदास साहब के, सत्नाम ही सार है...

पहली आरती गिरौदपुरी कीन्हा, गिरौदपुरी कीन्हा। गुरू घासीदास जनम जहॉ लीन्हा हो।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

दूजे आरती पिता मंहगूदास सोहे, मंहगूदास सोहे। माता अमरौतीन मन आनंद पोहे हो।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

तीजे आरती छाता पहाड़ कीजै, छाता पहाड़ कीजै। सत् ज्ञान जहॉ गुरूजी लीजै हो।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

चौथे आरती जैतखाम गाये, जैतखाम गाये। काम, क्रोध, मद, लोभ भगाये हो।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

पांचवें आरती भण्डारपुरी गॉवे, भण्डारपुरी गॉवे। सत् ज्ञान जहॉ गुरूजी लखावें हो ।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

छठवे आरती गुरू बालकदास के गावैं बालकदास के गावैं। सतनाम सेना जहॉ रावटी लगावे हो ।। आरती होथे घासीदास साहब के,

सातवें आरती सब सन्तों घर जावे , सन्तों घर जावे। सतनाम सब हिरदे समावे हो।। आरती होथे घासीदास साहब के,.

अमरवाणी ः

1 . मरे के बाद पीतर मनाय हर मोला बैहा कस लागथे।
2 . तैंहर अपन भाईच ल खावे।
3 . तोर पीरा हर ओतकेच अकन आय, जतका मोर आय। कोनो जीव ला झन मारबे।
4 . तोर दाई दाईच ये, त मोरो दाई दाईच ये। दाइ हर दाइ आय।
5 . मुरही गाय के दुध ला झन पीवे।अऊ भैंस ला नागर झन जोतबे।
6 . एक धूबा मारे तेनो, तोर बराबर आय।अर्थात एक गर्भ (का बच्चा) शिशु भी तुम्हारे समान है।
7 . दान के लेवैया पापी, दान के देवैया पापी।
8 . भगवान के नाम पर पान, परसाद, नरियर, सुपारी चढ़ावन हा ढोंग आय।
9 . मोर हा तो संत के (तोर) आय, तोर हा मोर बर किरा आय।
10 . करिया हो के गोरिया हो, ये पार के हो के ओ पार के हो, मनखे हर मनखे आय। ‘सबो मनखे एक बराबर हैं।’
11 . तोर ला संत खाही, संत के ला तैहर खावे, नहीं तो सतनाम ला छोड़ देवे।
12 . तोर भगवान हर भगवान नोहय, मोर भगवान हर भगवान(अपन घट) आय, तोर भगवान एक बहेलिया आय।
13 . गिआन के पंथ, किरपान के धारा अर्थात ज्ञान मार्ग दोधारी तलवार है।
14 . पढ़ ले , सुन ले, मूंदे केला मूंद ले, जेहर नई मुंदावय तेन ला कहिवे झन।
15 . अवईया ला रोकौं नहीं जवईया टोकौं नहीं।
16 . मोला देख, तोला देख, बेरा देख कुबेरा देख, जौन कछु हावय, तौन ला बॉट बिराट के खा लेव।
17 . सबो सन्त एक बरोबर। जे ज्ञान दीही ते ज्ञानी जे निन्दा करही ते अभिमानी।
18 . मोर सन्त मन मोला काकरो ले बड़े झन कइहा। नई तो मोला हुदेसना मा हुदसे कस लागही।
19 . मन्दिर मस्जिद बनई हर मोर मन नी आय । तोला बनाए बर हे त तरिया बना, दरिया बना, कुआ बना, धरमशाला बना, अनाथघर बना, दुर्गम ला सरल बना।

विनीत ः- समस्त सतनामी समाज (स्वागत रजि. 4250)